मरूमेघ
किसान ई – पत्रिका
www.marumegh.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
©2019 marumegh
ISSN:2456-2904

बायोडायनामिक : ज्योतिष शास्त्र पर आधारित खेती

अलीशा कुमारी*
सस्य विभाग
डॉ0 रा0 प्र0 के0 कृ0 वि0, पूसा, समस्तीपुर (बिहार)–848125
*Corresponding author: verma234alisha@gmail.com

बायोडायनामिक खेती प्राचीण खेती में से एक है। इसमें मिट्टी की उर्वरता, पौधों की वृद्धि और पशुधन की देखभाल एक साथ आध्यात्मिक दृष्टिकोण से की जाती है। यह जैविक कृषि के समान है। इसमें जैविक खेती के समान खेत और फसल पर जैविक खाद और किटनासक के प्रयोग को बढ़ावा देता है और रसाईनिक खाद और किटनासक के कम प्रयोग पर बल देता है।

- इसकी स्थापना 1924 मे रूडॉल्फ स्टीनर ने की थी। डॉ रूडोल्फ स्टीनर एक दार्शानिक वैज्ञानिक और आध्यात्मिक शिक्षक थें। स्टीनर ने व्हिट्सन 1924 को एक व्याख्यान श्रृंखला में वायोडायनामिक खेती की चर्चा करते हुए इसे नया और अपरंपरागत तरीके का खेती कहा था। इसमें पशु, फसल और मिट्टी को एक प्रणाली माना गया है। फसल की बुआई ज्योतिष शास्त्र और रोपण कैलिडंर के अनुसार करते है।
- वायोडायनामिक कैलेंडर : यह कैलेंडर रूडोल्फ द्वारा दिए गए सुझावों पर आधारित है। यह ग्रहों की चाल पर आधारित है। जैसे आरोही दिन (चंद्रमा) एवं अवरोही दिन (चंद्रमा)

(1) **आरोही दिन (चंद्रमा)** : जब चंद्रमा और पृथ्वी के बीच की दूरी बढ़ती है उस दिनों को आरोही दिन कहते है। इन दिनों में हम निम्नलिखित काम कर सकते है।

(1) सीधे बीज की बोआई (2) रोपन के लिए बीज की बोआई
(3) पत्तेदार सब्जियों और फलों की कटाई (4) बी0 डी0–501 का छिड़काव

(2) **अवरोही दिन (चंद्रमा)** : जब चंद्रमा और पृथ्वी के बीच की दूरी कम होती है उन दिनों को अवरोही दिन कहते है। इन दिनों में हम निम्न काम कर सकते है।

(1) रोपाई (2) खाद बनाना (3) जुताई (4) बी0 डी0–501 बनाना

- **वायोडायनामिक तैयारी** : वायोडायनामिक खेती में 9 वायोडायनामिक तैयारी का इस्तमाल होता है, जिसे बनाने की वृद्धि स्टीनर के द्वारा दिया गया है। इसको खनिज, पेड़ और जानवर की मदद से बनाया जाता है, जिसे बहुत कम मात्रा में खाद के साथ या बिना मिलाऐ खेत और फसल पर इस्तेमाल करते है। वायोडायनामिक तैयारी को 500 से 508 में विभाजित किया गया है।

(1) बायोडायनामिक 500 : बायोडायनामिक 500 में सिंग खाद की चर्चा की गई है। गाय के ताजा गोवर को गाय के सिंह में अच्छे से भड़ा जाता है। आश्विन नवरात्री को इसे 1 फिट चौड़ी और 1 फिट गहडा गढ़डे में सिंग के नुकीले भाग को उपड़ की तरफ करके गाड़ा जाता है। इसे चैत्र नवरात्री को 6 महीने बाद निकाल लिया जाता है।

(2) बायोडायनामिक 501: 501 को बनाने के लिए Silica को गाय की सिंग में चैत्र

नवरात्री से आश्विन नवरात्री तक जमीन के नीचे एक फिट चौड़ी और एक फिट गहड़ी गढडे में सिंग को उपर की तरफ करके गाड़ा जाता है।

- बी0 डी0 502 से 507 का इस्तेमाल वायोडायनामिक कम्पोस्ट बनाने में करते है।
- बी0 डी0 502 – यारो (एकाइला मिलीफोलियम)
- बी0 डी0 503 – जर्मन कोमोमीला (मेट्रीकारीया कोमोमीला)
- बी0 डी0 504 – स्टींगींग नीटला (युट्रीका डायोका का पत्ता और तना)
- बी0 डी0 505 – ओक बार्क (क्र्यूकस अल्बा)
- बी0 डी0 506 – डेन्डीलीयोन (टेरेक्सम ऑफीसीनेट का फूल)
- बी0 डी0 507 – भेलीरीयोन (भेलीरीयोन ऑफीसीनेलीस का फूल)
- बी0 डी0 508 – सीलीका से भड़पूर पौधा इसका प्रयोग बिमारी को कम करने के लिए करते है।
- **वायोडायनामिक प्रमाणः** डेमिटर वायोडायनामिक ® मानक की स्थापना 1928 में किया गया था। बायोडायनामिक प्रमाणिक संयुक्त राज्य अमेरिका में डेमिटर USA (www.demeter.usa.org) द्वारा प्रबंधित किया जाता है। भारत में डेमिटर सर्टिफिकेशन ऑफिस भारत के डेमिटर सर्टिफिकेशन प्रक्रिया पर आधारित है, जो इंटरनेशनल सर्टिफिकेशन ऑफिस ऑफ डेमिटर इंटरनेशनल ई0 वी0 पर आधारित है।

डेमेटर प्रमाण प्राप्त करने के लिए आवश्यक बातें।

1. पूरे खेत को डेमेटर नियम के अनुसार बनाने के लिए सभी फसल, पशुपालन और चारा उत्पादन और उत्पादन करने वाली जमीन को डेमिटर नियम के अनुसार बनाना चाहिए।
2. पशुधन 0.2 से 2 प्रति हेक्टेयर के बीच हो।
3. साल में कम से कम एक बार सिंग खाद, सिंग सिलिका और बायोडायनामिक खाद का प्रयोग होता हो।
4. सभी जैविक खादों में बायोडायनामिक खाद का प्रयोग होता हो।
5. बीज और रोपण सामाग्री डेमिटर से उत्पादीत हो, अगर नहीं मिले तो जैविक से उत्पादीत होनी चाहिए।
6. जी0 एम0 ओ0 मुक्त बीज होनी चाहिए।
7. कीटनाशक का प्रयोग नहीं होना चाहिए।
8. उत्पादन, परिवहन, प्रसंस्करण, भण्डारण में पार्दशिता होनी चाहिए।

आमतौर पर डेमेटर प्रमाणिकरण प्राप्त करने में तीन साल का रूपांतरण समय लेता है। रूपातंरण का समय तीन साल से कम में भी पूरा हो सकता है, अगर पहले से खेत पर जैविक खेती होती हो।

***